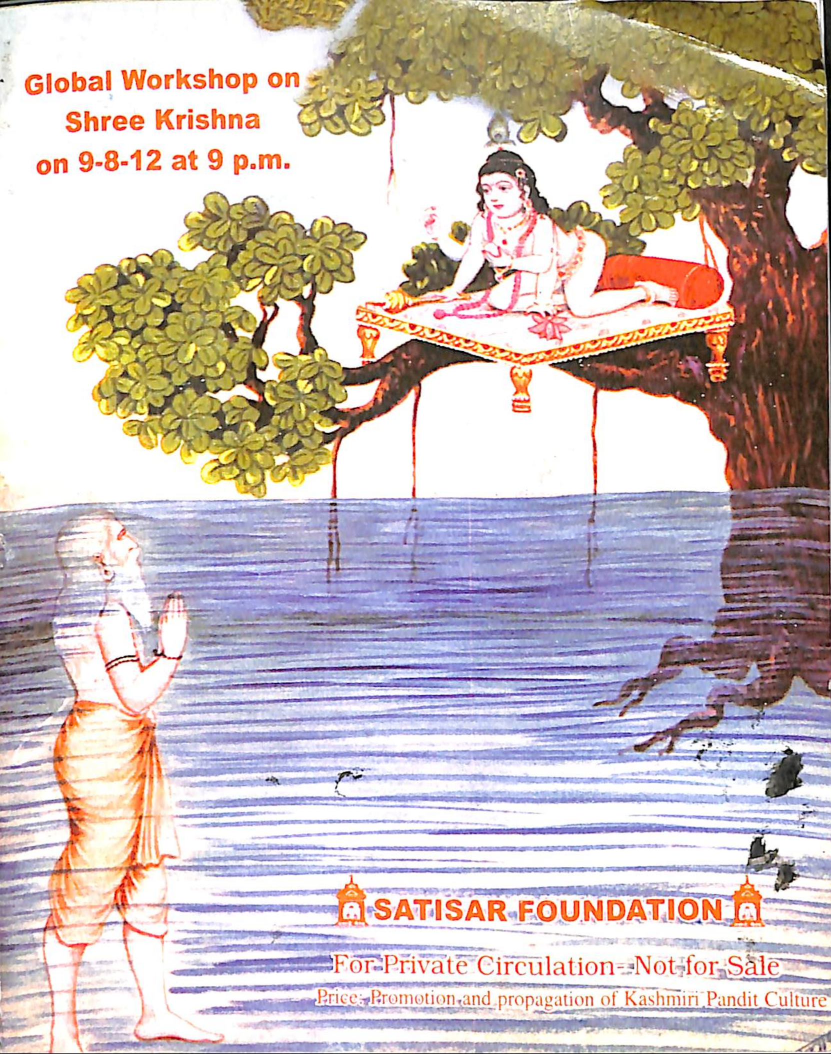
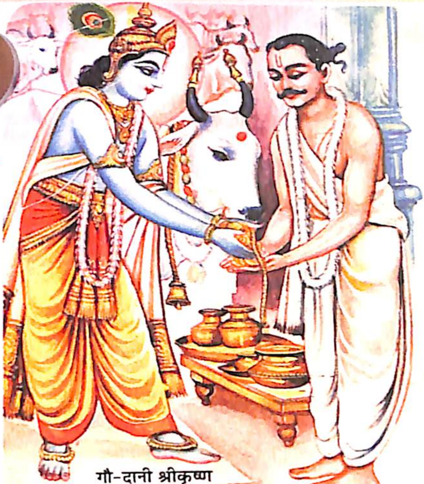
Global Workshop on Shree Krishna on 9-8-12 at 9 p.m.



SATISAR FOUNDATION

For Private Circulation- Not for Sale

Price: Promotion and propagation of Kashmiri Pandit Culture



गौ-दानी श्रीकृष्ण



ध्यानपरायण श्रीकृष्ण



गीतावक्ता श्रीकृष्ण



जगद्गुरु श्रीकृष्ण

Janamashtami- A Festival of Spirituality and Simplicity

Janamashtami is an important festival celebrating the birth of Lord Krishna, Ras Lila – dramatic enactment of life of Lord Krishna, Dahi Handi- the childhood and Komarya Swaroop.

In Kashmir apart from traditional fasting and prayer also has a social angle wherein we send fresh fruits grown in Kashmir to our daughters house adding an additional festivity and fervour.

But one of the most important & humanistic manifestation of Shree Krishna , is his message of love , brotherhood, friendship ,kinship, sobriety and universal good which manifests in Shri Sudhama Ji, the poor childhood buddy of Lord Krishna getting bestowed with all material things around by Lord Krishna. This manifestation is crucial in making a distinction between the material world and spirituality and self seeking. A poem, given at the end, which Shri Sudhama rendered to his wife Susheela (when he reaches his home and finds his poverty replaced by things of joy and materiality by Lord's grace) is fairly relevant. Let us pray to Lord Krishna this Janamashtami to bestow upon us his divine light and pull us out of the present darkness.

Tatha Astoo

Vidhwat Mandal, 9419192733

Social Code: Strengthen Socio-cultural Institutions;

जप समय – 09.08.2012 at 9 P.M.

(जो व्यक्ति घर, मन्दिर अथवा सभा में बैठे हो वह पहले निम्नलिखित विधि का प्रयोग कर सकते हैं) जो व्यक्ति यात्रा में हो वे केवल **ध्यान** व **मन्त्र** उच्चारण करें।

(The people who may be at home, Temple or in a group can follow the following prodedure) & those who may be in travel can recite ध्यान व मन्त्र only.

1. धूप–दीप जलाएँ,
2. सब को तिलक लगाये
3. श्री कृष्ण के चित्र पर तिलक व पुष्प लगायें
4. जप के बाद नैवद्य के रुप मे जन्माष्टमी पूजा के बाद फल सब में बांटे।



The Puja Mannual of Janam Saptami (जरम् सॅतम पूजा विधि) has already been printed and distributed in 2009 & the same can be downloaded from our web site www.satisar.org or can be had from our office.

जप विधि...

ॐ श्री गणेशाय नमः
श्री गुरुवे नमः

जयतु जयतु देवो देवकी नन्दनोयं
जयतु जयतु कृश्णो वृश्नि वंश प्रदीपः।
जयतु जयतु मेघ भयामलः कोमलांगो
जयतु जयतु पृथ्वी भार नाशो मुकुन्दः।। — ध्यान

Jaytu Jaytu Devo Devkee Nandnoyam
Jaytu Jaytu Krsihno Vrushne Vansh Pradeeph
Jaytu Jaytu Megh Shamala Komalango
Jaytu Jaytu Pruthvi Baar Nashoo Mukandh

मन्त्र

ॐ राधा पतये श्री कृष्णाय नमः (1008 बार)

Om Radha Patye Shree Krishnaay Namah

रा – इच्छा, धा – पूर्ति करने वाले

रा, धा, प, त, ये, श्री , कृष, ना,य – The seeds

अच्युताष्टकम....

अच्युतं केशवं रामनारायणं,
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं,
जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।।
Acyutam Keshavam Raama-Naaraayannam
Krssnna-Daamodaram Vaasudevam Harim |
Shrii-Dharam Maadhavam Gopikaa-Vallabham
Jaanakii-Naayakam Raamacamdram Bhaje ||

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं,
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं,
देवकीनन्दनं नन्दजं संन्दधे।।
Acyutam Keshavam Satyabhaamaa-Dhavam
Maadhavam Shrii-Dharam Raadhika-[A]araadhitam |
Indiraa-Mandiram Cetasaa Sundaram
Devakii-Nandanam Nanda-Jam San-Dadhe ||2||

विष्णवे जिष्णवे शाङ्खिने चक्रिणे
रुक्मिणि रागिणे जानकी जानये।
बल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने
कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः।।
Vissnnave Jissnnave Shaangkhine Cakrinne
Rukminni-Raaginne Jaanakii-Jaanaye |
Ballavii-Vallabhaay-Aarcitaay-Aatmane
Kamsa-Vidhvamsine Vamshine Te Namah ||3||

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वसुदेवाजति श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ।।
Krssnna Govinda He Raama Naaraayanna
Shrii-Pate Vaasudeva-Ajita Shrii-Nidhe |
Acyuta-Ananta He Maadhava-Adhokssaja
Dvaarakaa-Naayaka Draupadii-Rakssaka ||4||

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो
दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरौः सेवितो ऽगस्त सम्पूजितो
राघव पातु माम्।।
Raakssasa-Kssobhitah Siitayaa Shobhito
Dannddakaarannya-Bhuu-Punnyataa-Kaarannah |
Lakssmannen-Aanvito Vaanarauh Sevito-\
[A]gasta-Sampuujito Raaghava Paatu Maam ||5||

धेनुकारिष्टकानिष्टकृद्द्वेषिहा
केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः।
पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो
बालगोपालकः पातु मां सर्वदा।।
Dhenuka-Arissttaka-Anisstta-Krd-Dvessihaa
Keshihaa Kamsa-Hrd-Vamshikaa-Vaadakah |
Puutanaa-Kopakah-Suura-Jaa-Khelano
Baala-Gopaalakah Paatu Maam Sarvadaa ||6||

विद्युदुद्योत्प्रस्फुरद्वाससं
प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।
वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं
लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ।।



Vidyud-Udyota-Vat-Prasphurad-Vaasasam
Praavrdd-Ambhoda-Vat-Prollasad-Vigraham |
Vanyayaa Maalayaa Shobhito[a-U]rahsthalam
Lohita-Angghri-Dvayam Vaarija-Akssam Bhaje ||7||

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं
रत्नमौलिं लसत्कुण्दलं गण्डयोः ।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं
किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ।।
Kun.citaih Kuntalair-Bhraajamaana-Ananam
Ratna-Maulim Lasat-Kunndalam Ganndayoh |
Haara-Keyuurakam Kangkanna-Projjvalam
Kingkinnii-Man.julam Shyaamalam Tam Bhaje ||8||

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं
प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविश्वम्भरस्तस्य
वश्यो हरीर्जायते सत्वरम् ।।
Acyutasyaassttakam Yah Patthed-Isstta-Dam
Prematah Pratyaham Puurussah Sasprham |
Vrttatah Sundaram Kartr-Vvishvambharas-Tasya
Vashyo Harirjaayate Satvaram ||9||

Yogaeshwar Krishna...as defined in Kashmir

चिदानन्दाम्भोब्धेरूयदति पराकामलहरी
प्रसूते भावौधं धरति मातृवपुषा।
प्रयतादेवक्यां निजजनरतं पातुमहर्निशम्
महा शक्तिः सैषा जगति जयतात्कृष्ण वपुषा।।

चित रुपी स्वच्छन्द व आनद के सागर से दिव्य इच्छारुपी लहर स्वतः ही उभर कर उठ खडी हुई इसी इच्छा लहर से सम्पूर्ण पर्दाथ राशि का प्रसार मातृ–स्वरुप से सृष्टि और संहार की प्रक्रिया के रुप मे विकसित होकर अस्तित्व मे आया। यही अबाध एवं स्वच्छन्द इच्छा रुपी लहर माँ देवकी के गर्भ रुपी तट से जाकर टकराई और यही महाशक्ति करुणाशील और परित्राण करने वाली माँ अपने भक्तजनों के रात–दिन सृजन और संरक्षण के लिए भगवान श्री कृष्ण के अवतार के रुप मे स्वतः अवतीर्ण होकर इस जगत में प्रकट हुई।

In the concious ocean of independence & bliss, a wave of divine "will" immerged of its own & from this divine "will" transmitted all the "Matter" which in the form of "Mother" developed and thus came into existence the process of evolution and involution.

That uninterrupted & independent wave of "will" hit the shore of the womb of Mother Deviki & this great energy of compassion & salvation giver Mother creates & preserves the faithfulls (Shradhawaan) by assuming herself the **Avatar of Shree Krishna** in this world.

These are the personal utterances of Maha Maheshwaracharya Swami Shree Ram on Janam Ashtami, who is the fountain head of Kashmir order of Shaiv & Shakta.

Yog Krishna Amrit for students

न बुद्धि भेदं जनयेदज्ञानां कर्मसगिङ्नाम्

भिन्न अवस्थाओ के कारण अपने भाव न बदलो।

Do not change your concepts according to situations.

महाबाहो नैवं शोचितुमर्ऽसि

यदि शरीर की अवस्थाओं के बदलने पर शोक करना है तो बालपन से यौवन आने पर हम शोक कयों नही करते?

If we are to grieve the change in physical bodies then why not we grieve at the change to youth from a small baby?

य एनमात्मानं प्रबुद्ध त्वाज्जानाति, न स हन्ति न स हन्यते।

जिसको आत्मा का बोध हो चुका हो वह न तो किसी को मारता हे न मरता है।

One who realises the reality of Atma (Root), he never kills and never gets killed.

As per Kashmir Order a day is considered from one sun rise to another so in case of night births the day remains the same viz. birth during Saptami night is celebrated on Sapami itself, that is how Janam Saptami is celebrated in Kashmir.

यदप्रार्थ्यमानं फलं तत् ज्ञानम्

न मांगा हुआ कर्मफल ही ज्ञान है।
The disinterest towards the results of Karma is the **knowledge.**

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि।।

जेसे सूर्य इत्यादि के लिए अवकाश नही वेसे ही अपने ध्येय को प्राप्त करने मे कोई अवकाश नही है।
In persuit to your aim, never ask for a break.

मोहात्–अभि निवेशमयात्

आगे पीछे सोंचे बिना ही हठ पुर्वक कर्म करने को मोह कहते है।
What ignorance begets is called dillusion.

प्रतिजानेऽहं न मद्भक्त प्रणश्यति

मे प्रतिज्ञा करता हूँ कि मेरा भक्त फिर अपने लक्षय से नही डिगता।

I Promise, that those will never fail who keep faith on me.

सर्वकर्म संस्काराणां भगवत्, स्मृत्या विफली करणात्!

भगवान को सदा याद रखने से सभी कर्मो के संस्कार (स्वतः) मिट जाते हे तथा सहज में ही परमशिव अवस्था प्राप्त होती है।

Remembering the lord always, exhausts the inheretance of Karma (impressions) & with the lack of any inherited Karma, One obtains the Shiv State.

मनसैव–न व्यापरोपरमेन

मन से ही संकल्पो का त्याग करे– कर्मों को त्यागने से नही।

Get rid of hings at your mind not merely by stoping the Karma (Indulgence).

आत्मानं चित्तं च युञ्जीत–एकाग्रौ कर्यात

बुद्धि और मन को मिलाए–एकाग्र बनाये सदा–थोडे समय के लिए नही।

Coordinate the mind & intellect forever, not for small time

नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्

श्रद्धावानों के लक्षय की प्राप्ति के लिए श्री कृष्ण स्वयं सारथी बनते है।

For people with belief & in persuit of their goals the lord himslef becomes the torch bearer.

न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिपु लोकेषु किञ्चन। नानवाप्तभवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि।।

सभी कुछ प्राप्त होकर भी सहज रहने की कला श्री कृष्ण ने सिखाई, कंस को मार कर वह राजा नही बने अपितु लोक निमार्ण करते रहे।

Even after the great achievemets, one should behave like a commoner.

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः

श्री कृष्ण त्रिभुवन स्वामी होकर भी शान्ति दूत बने धर्म,
प्रेम, विश्वास व शन्ति को आधार बनाये।
Lay the foundation of your personality on Dharma,
Love, faith and peace.

तेषामहं समुद्धर्ता.........चेतसाम्

अपने पर विश्वास करने वालों को सदा मंझधार से उबारा
जैसे..... गोपियो को, बालसखा उद्धव जी व सुदामा, कुब्जा
को द्रोपदी व अर्जुन इत्यादि को
किसी के विश्वास को कभी नही तोडना।
Never break the faith which people repose on you.

प्रज्ञा प्रतिष्ठता

हमें संसार का दास नही अपितु स्वामी बनना है।
We are here to become masters not slaves.

अभिलाषो हि बन्धकः

अभिलाषा ही मनुष्य को बाँधती है
"wanting" bonds a persons:

योगी च सर्व व्यवहारान कुर्वाणो ऽपि लोकोत्तरः

योगी तो सभी व्यवहार निभाता हुआ भी साधारण जनो से निराला है

Master is he, who seems to enjoy & perform all obligations but still remains distinctive in the family.

विघ्याया चावघते योगे यत्र सर्वे विमूढः अविध्यायां त्वबुद्धः यत्र जन प्रबुद्धः

जिस अविध्या के कारण हम सभी वस्तुओं से मोहित होते है सतर्क व्यक्ति उन–उन वस्तओं के कारणों पर ध्यान देते है।

An allert person concentrates on the reason of being fop.

We are thankful to all those Shiv Sadhakas (साधक) who provided the Kashmir order of Krishna consciousness, we are also indebited to all others who work, distribute & provide infrastrctural help of all sorts silently & without any expectations from us even not a thanks.

आ ब्रह्मण्ष्च कीटान्तं न कश्चित्त्वतः सुखी....

ब्रह्मा से लेकर कीडे तक वास्तव मे कोई भी सुखी नही है कयोकि सभी जीवत रहने के लिए अपने निज स्वरुप के विरुध चेष्टा करते है।

From Brahma Ji down to insect life nobody is comfortable, because every body acts in reaction to outer & inner world (Hypocracy).

निद्रात–आलस्येन प्रमादेन, यत्सुखं तत्तामसम्

निद्रा– आलस्य से उत्पन्न प्रमाद से जो सुख पैदा होता है वह तामस सुख ह।

Sleep : It is the outcome of inertia, which begets lowest kind of pleasure.

आत्म प्रसादाद् बुद्धि प्रसादो जायते

मन की निर्मलता से बुद्धि की निर्मलता होती है

A fine mind is indicative of fine intellect.

निद्रा कलह आदिष्वेव यया सन्तोशं बध्नाति तत्परतया–सा तामसी धृतिः

जिस धैर्य से कोई नीद, लडाई, झगडों मे ही जुटा रहे तथा सन्तुष्ट बना रहे उसे तामस् धैर्य कहते है
The patience with which a person indulges in sleep, war, quarrels and even remains contended is the lonest kind of patience.

अभ्यासेऽप्यसमर्थो:

यदि आप अभ्यास करने मे भी असमर्थ है तो मेरे परायण होवें।
If you are not able to even continue "Practice" then surrender to me.

यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो....

जहाँ योगेश्वर कृष्ण और धनुषधारी अर्जुन है वहीं पर सब कुछ है।
Where the mind & body, mind & intellect, practice & practioner, perfect teacher & student join together, one gets every thing there.

Susheela- Sudhama Samwaad

Krishna Krishna Chukh Karan Rat O Den, Telye Wan Ta Bhagwan Konay Aaw.

Chey Sudhaman Tri Wanan Tas Sudhamas Telye Gach to az Vant Ta Bhagwans.

And finally being forced and co-erced by Susheela, Shri Sudhama ji with tearful eyes leaves for the palace of Great Lord - his bossom buddy to pray to him to rid him of penury and distress.

(This poem is translated from a Kashmiri Poem sung in memory of Sudhama Ji reaching his home after visiting his buddy Shri Krishna and revealing the truth of Krishna Awtar to his Wife Susheela. The message and moral of the story is clear -we should shed quest for material aspects and cleanse our inner for ultimate salvation and subsumation with Great Lord Krishna) . And when Sudhama Ji returns from Lord's Palace and finding his little mud hut not around and in tears , he narrates the following verses to Susheela first in anguish, disgust and ultimately in joy & praise of Lord Krishna

हतसॉ, भगवाण याद थावतन

मतसॉ, कुनि विज़ि मशॅरावतन ।।

O dear Susheela, God is great forget him never

1 सुशीला असि वनत् घर् कोत गव,
कॅहन्ध्यन मॅहलन ध्युतथम द्रांव
शूभी न् अव किन ऑस छि ब्राहमण
हतसॉ, भगवाण याद थावतन.....

1. Susheela, where has my old home gone
In whose palaces have we gone
For us poor brahmins this doesnot behove ever
O dear God is great forget him never



2. यत्य् नीरिथ गोस द्वारिकाये,
दूरि–दूरि चूरि रुदुस ब् छाये
आदर कोरुम गोड़ ड़ीड़वानन
हतसॉ, भगवाण याद थावतन.....

2. I went to Dwarka
Remained Away and Hidden
But watchmen showed me adulation seen never
O dear, God is great forget him never

3. मीठि तिमव दिति मेय पादन
रुक्मणी जी त् कृष्ण भगवानन
वुछि–वुछि ब् ओसुस हयस व्यसरान
हतसॉ, भगवाण याद थावतन.....



3. They kissed my feet
Both Rukmani and Krishna
I felt overwhelmed with joy and fervour
O dear, God is great forget him never

4. त्रेशव्न दोहन त त्रेशवन रॉच
काश कि न्यन्दर करिहे कॉह बॉच
रॉत्य रात्स ऑस्य मेय थर छारन
हतसॉ, भगवाण याद थावतन.....

4. For three days and three nights
Did not they sleep
both served me days and nights tired never
O dear, God is great forget him never

5. त्रेय दोह चॉल ब घर फयूरुस
ओसुस ब गोमुत आथि सोंचस
केंहति ध्युत न मेय बालयारन
हतसॉ, भगवाण याद थावतन.....



5. After three days I returned to my home
I was thinking with remorse and pain
my buddy didnot give me anything visit shall I now him ever
O dear, God is great forget him never

6. उतम छु उतमय नियम धारान
दिथ करिथ छुन् ज़ाहँ ज़ेवि खारन
सु ओसुस कम दिन किनि मन्दछन
हतसॉ, भगवाण याद थावतन.....

6. Great is Lord and great are his ways
He gives everything but never he says
I thought Lord was ashamed of giving me little, however
O dear, God is great forget him never

7. अॅस्य गछव यथ मायायि बेडिय,
अन्दरिम नाव नियि न्यबर कडिथ,
मनटिनि लेजि इन् गछि ड़ोड़मन,
हतसॉ, भगवाण याद थावतन.....



7. Susheela , we must now get out of this material
we must introspect and cleanse our inside
So that our inner is not filled with worldly filth ever
O dear, God is great forget him never

8. शाबाश अॅस्यनय जय जयकार,
फिकिरि छुय तोरमुत टोठ अवतार,
कृष्ण–कृष्ण करन् सूत्य टोठि रुक्मण,
हतसॉ, भगवाण याद थावतन.....

8. Bravo my Lord
You showed me Krishna Awtar
reciting Krishna Krishna – rukamini too can be pleased
by cleaning our body of worldly fervour for ever
O dear, God is great forget him never

Ancient Kashmiri poem provided by Smt. Pyari Razdan with english translation rendered by Sh. V. Wangnoo



सतीसर सभा मध्ये विदेशं ये गतैः नर।
सतीसर विद्वानेन च्युंत धर्मादि जीवितं।।

धर्म संस्थापनार्थाय ते नरः सुखवान् भवेत्।
निशुल्क पुस्तकान्दध्यात् अधर्म नाशयेत् सदः।।

मेरा आर्शिवाद है कि ईश्वर इनको सफलता प्रधान करें तथा इस पुस्तक के सभी मंत्र व पाठ समय–समय पर अपना प्रभाव दें।



Jyotishachyara &
Karam Kand Shiromani
Sh. Kashi Nath Handoo



SATISAR FOUNDATION

C/o Sri Sri Jagatamba Sharika, Hari Parbat, Devi Angan,
Paloura Buta Nagar-Jammu
Post Box No. 118, Head Office Rani Talab, Jammu, J&K-India
Correspondence:- C/o 181-A Sector-2, Pamposh Colony,
Janipur-Jammu-190007 (J&K)
E-mail:- satisar2000@yahoo.com, Visit us at : www.satisar.org
Tel:9419117251,9796457461 (off), 9419134180,
09810137771 (Delhi), 09845907365 (Banglore)

RCC: 9622118949